सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

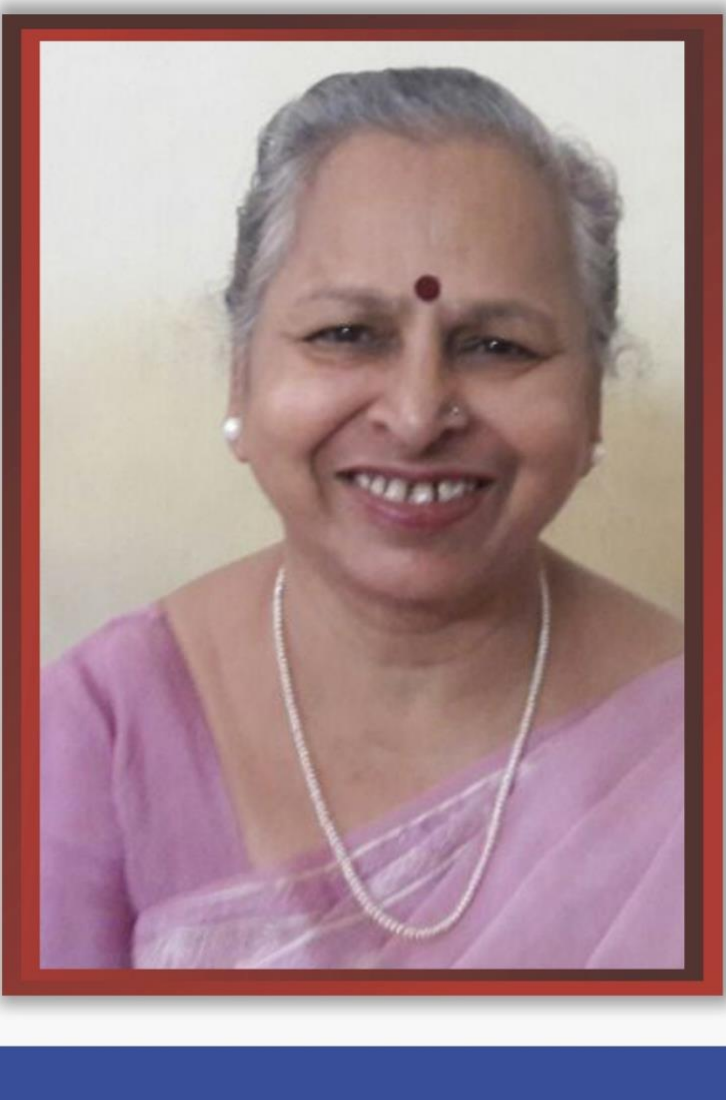

केन्द्रीय रचनाकार

• राधा गोयल

सृजक-सृजन-समीक्षा

राधा गोयल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

राधा गोयल का परिचय

नाम- राधा गोयल
जन्मतिथि- 03/08/1948
पति का नाम- श्याम सुंदर
निवास स्थान- दिल्ली
शिक्षा- बी. ए,बी.एड
Email ID- radhagoyal222@gmail.com
मेरा संक्षिप्त परिचय: --

हमारे परिवार में लड़कियों को ज्यादा पढ़ाना ठीक नहीं समझा जाता था। आठवीं कक्षा तक सरकारी स्कूल में पढ़ाई की। आगे पढ़ने के लिए लगातार एक महीने तक खुशामद करने के पश्चात पत्राचार माध्यम द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा दी व प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हूई। फिर पढ़ाई की बंदिश; किंतु पढ़ने की ललक के कारण मैंने भी हठ पकड़ ली और पत्राचार माध्यम द्वारा ही पंजाब यूनिवर्सिटी से सन 1964 में हायर सेकेंडरी की परीक्षा दी तथा पूरी दिल्ली में टॉपर रही।आगे पढ़ने की बिल्कुल भी इजाजत नहीं मिली।

लेखन के प्रति बचपन से ही रुचि थी, लेकिन मेरा यह शौक किसी को भी पसंद नहीं था। 1970 में सात बहन भाइयों के मध्यम वर्गीय परिवार में विवाह हूआ।ससुर का देहांत 1965 में हो चुका था।पति परिवार में सबसे बड़े हैं। ननद देवरों के पालन पोषण, उनके विवाह की जिम्मेदारियों ने कभी मेरे शौक की तरफ मुझे झाँकने का अवसर ही नहीं दिया। उसके बाद अपने बच्चों की जिम्मेदारी। अब सभी जिम्मेदारियाँ पूरी करके अपने शौक को पुनर्जीवित किया है। पति आधुनिक विचारों के हैं। उनकी इच्छा थी कि मैं आगे पढ़ूँ अतः 1986 में पत्राचार माध्यम से बी ए किया तथा पूरी यूनिवर्सिटी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।उसके बाद बी.एड किया।
समाज कल्याण के कामों के प्रति बहूत जुनून है और गम्भीर बीमारी होने के बावजूद मेरा जुनून मुझे जीवित रखता है।साहित्य व इतिहास में बहूत रूचि है किन्तु अफसोस कि मुझे अपने शौक को पूरा करने के लिए अपेक्षित सहयोग बिल्कुल नहीं मिला।

राधा गोयल

"सृजक का सृजन"

शीतल बनाम आग

चाँद अगर शीतल है तो वह, आग लगा भी सकता है।
प्यार भरे दो दिल को चिंगारी दे..... सुलगा सकता है।
पिया अगर परदेस भए.......चाँदनी नहीं तब भाती है।
तब तो ये चाँदनी हसीना ....ज्यादा ही तड़पाती है।
प्रिय का जब हो साथ.....चाँदनी रातें अच्छी लगती हैं।
साथ नहीं जब प्रिय,तब ये दिल को सुलगाने लगती हैं।
स्निग्ध सुधामय मधुर यामिनी दाहक भी बन सकती है।
शीतलता तो देती है, दिल को..... सुलगा भी सकती है।

सोना जिसको समझा था?

दिल की लगी को दिल ही जाने दिल क्या कुछ कर सकता है।
प्यार में दीवाना होकर............यह पागल भी हो सकता है।
इश्क में जिसके जान लुटाई सीरत
क्या है ....पता नहीं।
जिसको सोना समझ लिया पीतल भी तो हो सकता है।
कलियुग छाया घोर धरा पर,कुछ भी कहीं हो सकता है
संत जिसे समझा था हमने...... डाकू भी हो सकता है
पहले यदि जान पाते तो, सावधान हम हो जाते
कि जिसको सोना समझा... वो पीतल भी हो सकता है

ठोकर

खुदा भी गर जमीं पर आज आकर देख यह लेता
जमाने की जो हालत है.... कलेजा फट गया होता
लगाते रोज ठोकर हैं यहाँ, अपने ही... अपनों को
दगा देते हैं रोजाना यहाँ अपने..... ही अपनों को
ये जिनके खून से जन्मे हैं... उनको भी दिया फटका।
सभी कुछ छीनकर उनका वृद्ध आश्रम में ला पटका।

आदत

तुम्हें आदत रही.......... ...जलाने की।
हमें आदत रही............... बुझाने की।
सिलसिला जाने कब से चला आ रहा है।
तुम जलाते रहे ....हम बुझाते रहे।
और बुझ-बुझ के भी....रोज जलते रहे।
जलाना तुम नहीं भूले,बुझाना हम नहीं भूले।
बुझाना चाहकर भी अब बुझाया ही नहीं जाता।
बताया भी नहीं जाता.... बताना ही नहीं आता।
हमें तुमको तुम्हें हमको,समझना ही नहीं आता।
मनाना चाहते हैं...........पर मनाना ही नहीं आता।
भुलाना चाहते तुझको......भुलाना भी नहीं आता।
तू बिल्कुल पास है मेरे.........मगर हैं दूरियाँ इतनी।
तू मेरे दिल में है,फिर भी लगाया दिल नहीं जाता।

जिन्दगी कैसे बिताएँ

अनमोल जिंदगी को इस तरह से बिता तू।
बनकर रवि गगन का, इस जग को पथ दिखा तू।
दुनिया को जीतने की नाकाम कोशिशों को,
रे छोड़, अपने मन के शत्रु के विजय पा तू।

छोटी सी जिंदगानी लंबी है तेरी मंजिल,
मंझधार में खड़ा तू कोई नहीं है साहिल,
ये हाथ पैर साहिल हिम्मत न हारना तू।

गर तू है कर्मयोगी, इस पल को नष्ट मत कर,
जो स्वप्न देखता है, उसको यथार्थ तू कर,
बीता जो पल न लौटे, इस जग को यह बता तू।

क्या लाभ जिंदगी का, कुछ काम न किया जो,
मानव वही है ,औरों के वास्ते जिया जो।
जब जाए इस जगत से,संसार को रुला तू।
अनमोल जिंदगी को इस तरह से बिता तू।

क्या यही धर्म है

रोहिंग्याँ मुसलमानों के समर्थन में
मुस्लिम धर्मगुरुओं ने
जुलूस निकाला।
रोहिंग्याँ मुस्लिमों की
जान माल की हिफाजत
के लिए..............
दरगाह में दुआ की।
क्या कभी ऐसा भी देखा
कि...
किसी बहन, बेटी, बच्चे की.....
आबरू लुटते.........
लहूलुहान होते बचपन
के लिए भी...
ऐसी दुआ की हो??
यह इंसान इंसान में
फर्क क्यों ?????
धर्म ने क्या सिखाया??
क्या यही धर्म है????
क्या यही धर्म है???

"सृजन की समीक्षा"

1.

सर्वप्रथम तो मैं आदरणीय राधा जी के **जज्बे को प्रणाम** करती हूँ। जो उन्होंने परिवार से विरोध कर उन्हें शिक्षा प्राप्ती के लिए मनाया।और शादी के बाद भी अध्ययन जारी रखा तथा समाज सेवा व हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में निरंतर योगदान दे रही हैं।

आदरणीय राधा जी **एक अनुभवी कवयित्री /लेखिका** साफ - साफ नजर आती हैं । आपकी रचनाओं से अनुभव का रस पान किया जा सकता है। उनकी रचना "**सोना जिसको समझा था** ।" धोखेबाजों से सावधान रहने के लिए समाज को सचेत करती है यह रचना हमें एक बड़ा सबक देती है कि इंसानों पर भरोसा बहुत सोच समझकर करना चाहिए ।

"**शीतल बनाम आग**" आदरणीय राधा जी की एक श्रंगार रस से परिपूर्ण कविता है जो विरह और पिया मिलन के सुंदर पलों के अनुभवों को व्यक्त करती नजर आती, एक मन को छू जाने वाली सुंदर रचना है। "ठोकर " उन माता- पिता को समर्पित रचना है जिन्हें उनकी ही औलादें वृद्धाश्रम छोड़ जाती हैं ये एक संवेदनशील रचना है।" जिंदगी कैसे बिताएँ" एवं "क्या यही धर्म है।" क्रमशः जिदंगी जीने के तरीके एवं नन्ही कलियों पर मंदिर-मदरसों में हुए अत्याचार को व्यक्त करती करूण रस झलकाती रचनाऐं है।आप सुंदर सृजन कर रही हैं **बधाई ।**

सीमा शिवहरे 'सुमन' ,भोपाल

2.

सबसे पहले तो मैं प्रीति जी आपका आभार व्यक्त करना चाहूंगी जिन्होंने मुझे समीक्षा लिखने योग्य समझा। **राधा गोयल जी की सभी कविताएं एक से बढ़कर एक है।** मुझे गर्व है कि मुझे उनकी कविताओं की समीक्षा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

1.शीतल बनाम आग :- इस कविता के माध्यम से आपने अपनी भावनाओं को सर्वोपरि रखते हुए प्राकृतिक चीजों की जो व्याख्या की है वह उत्तम है। सचमुच हमारे अंतर्मन की भावनाएं जैसी होती हैं हमें प्रकृति भी उसी रूप में महसूस होती है। प्रेमी के रहने पर सावन की बारिश दिल को ठंडक देती है पर विरह हमें यह सावन मन को जलाती है।

2. सोना जिसको समझा था : ---- आज की सच्चाई बयान करती कविता। कई बार हम भावनाओं में बह कर सामने वाले पर आंख मूंदकर विश्वास करने लगते हैं। पर बाद में पता चलता है कि हमने पीतल को सोना समझा था।

3. ठोकर : ---- सचमुच हमारे आसपास में वृद्धि समुदाय अपने ही पुत्र उसके ठोकर से त्रस्त हैं उनकी भावनाओं का उत्तम वर्णन किया है आपने अपनी इस कविता "ठोकर" में..

4. आदत : ----- बहुत सुंदर कविता । प्रेमी प्रेमिका के बीच समझने समझाने और रूठने मनाने की आदतों का सुंदर चित्रण।

5. जिंदगी कैसे बिताएं मनुष्य को हौसला देती और जिंदगी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दर्शाती यथार्थवादी कविता।

6. क्या यही धर्म है : ---- धर्म के राजनीतिकरण के कारण रोहिंग्या शरणार्थियों के लिए ऐसी दुआ की जा रही है । वास्तव में यह कोई धर्म नहीं। धर्म पर कटाक्ष करती अच्छी और सच्ची कविता।

आरती प्रियदर्शी

3.

आदरणीया राधा गोयल जी

सादर नमन

सर्व प्रथम तो आप अनंत अनेकानेक बधाइयाँ स्वीकार करे।

वैसे तो मैं आप को **अंतरा शब्दशक्ति** के माध्यम से जानता हूँ और अंतरा के कारण ही मुझे ये सौभाग्य मिला कि मैं आप से आप के 2 दिवसीय इंदौर प्रवास पर मुलाकात कर पाया और उसमें कुछ पल मेरे परिवार के साथ बिताएं।

आप की रचनाएं पढ़ने का अवसर तो मुझे नित प्रतिदिन होता है और आज आप का परिचय पढ़ कर बहुत प्रसन्नता हुई..ऐसा बहुत कम हो पाता है जहाँ विपरीत परिस्थिति में हठधर्मिता कर आप ने न केवल शिक्षा प्राप्त की बल्कि आप ने अपने आप को साहित्य के रंग में खुद को अच्छे से रंग लिया है और उस पर चढ़ती तरह तरह की रचनाएँ, निःसंदेह इंद्रधनुष की तरह आप का साहित्य चमक रहा है।

आप की रचनाओं में मुझे सब से अच्छी और खास बात ये लगी कि जैसे आप सरल और जितने आप जीवन मे **स्पष्टवादी और सटीक** हैं वैसा व्यक्तित्व आप की रचनाओं में भी झलकता है।

शीतल बनाम आग में आप ने बखूबी प्रियतम से साथ अपने अहसासों से जोड़ा है।

सोना जिसको समझा था और ठोकर..बहुत खूबसूरती से आप ने **बहुरूपिया** व्यक्तित्व का वर्णन किया है

आदत..व्वाह..सही कहा..ये ही तो फितरत है और ये ही सच्चाई..

जिंदगी कैसै बिताएँ, सही कहा है जीवन अनमोल है और सच मे इसको इतना अनमोल बना लो कि संसार की आँखों में आँसू हो।

क्या यही धर्म है..सच कहा आप ने..**इंसान के इस फर्क की पीड़ा को जो आप ने महसूस किया है और उकेरा है शब्दो में, निःशब्द हूँ..आप ने खूबसूरत संकेत दिया है सोचना होगा..समझना होगा..**
और सच कहूँ तो वाकई में सीखना होगा..

आप की रचनाओं के लिए पुनः **बधाई** और मैं आप को बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ..आशीष बनाये रखे

सादर नमन के साथ

शीतल खंडेलवाल

4.

आ. राधा गोयल जी की रचनाओं की समीक्षा
शीतल बनाम आग
आ. राधा गोयल जी आपने अपनी रचना "शीतल बनाम आग" में मानव मन की उस सच्चाई को उजागर किया है जिसमें व्यक्ति अपने मन की दशा दिशा का दोषारोपण किसी अन्य पर करता है। जैसे चाँद वही है नायिका भी वही है लेकिन जब उसके पिया पास होते है तो वही चाँदनी उसे शीतलता देती है वहीं दूसरी ओर पिया के वियोग में वही चाँदनी उसके तन मन में आग लगा देती है। यहाँ यह सब नायिका की मनोदशा के कारण है इसमें चाँद का कोई दोष नहीं उसकी चांदनी कल भी शीतल थी आज भी शीतल है। सुंदर भावानुकूल शब्द चयन।

सोना जिसको समझा था?
आज की परिस्थितियों के सच के प्रति सचेत करती उत्तम रचना। आज समाज में जो लोग मुखोटे लगाकर जो व्यवहार कर रहे है उनमें असली और नकली को पहचानना बड़ा ही दुष्कर हो गया है। क्योंकि जिस बेटे को पाल पोस कर बड़ा किया इस आस से की वह बुढ़ापे में सहारा देगा उसी ने वृद्धाश्रम में छोड़ दिया। वहीं जिसे संत माना वह ठग निकला,

व्यभिचारी निकला। जिसे सोना समझा वह पीतल निकला। नकली लोगों से सावधान करती उत्तम रचना। आज के ढोंगी लोगों के सच को उजागर करती उत्तम रचना। उत्तम विषयानुकूल शब्द चयन जो सार्थक अर्थ देने में समर्थ है। घोर कलयुग की सच्चाई को उजागर करती रचना।

"आदत"

किसी को चाहना। चाहत में किसी से दिल लगाना। हाले दिल बताना चाहा पर बता न पाए। एक आशिक की चाहतो का गुबार। त्याग व समर्पण का अनोखा भाव। विपरीत परिस्थितियों में अनुकूल भावाभिव्यक्ति।
बुराई के प्रति अच्छाई का भाव जगाती भावपूर्ण रचना। एक-एक पंक्ति समर्पण का भाव जगा रही है।
तुम जलाते रहे ....हम बुझाते रहे।

"जिन्दगी कैसे बिताएँ"

वास्तव में जिंदगी अनमोल है। जिंदगी का मोल सीखती प्रेरणदायी उत्तम रचना। जिसकी हर पंक्ति एक संदेश दे रही है, निराशा में उत्साह का, पराजय में जय का, हर स्वप्न को यथार्थ में परिणित करने का भाव जगाती उत्तम रचना।
यथा
अनमोल जिंदगी को इस तरह से बिता तू।
बनकर रवि गगन का, इस जग को पथ दिखा तू।

"क्या यही धर्म है"

वास्तव में आज के ज्वलंत समस्या पर सटीक प्रश्न उठाती रचना।
दरिंदों के लिए दुआ और
किसी बहन,बेटी,बच्चे
की आबरू लुटते लहूलुहान होते बचपन
के लिए दुआ क्यों नहीं धर्म के ठेकेदारों से एक ज्वलंत प्रश्न। आज धर्म के नाम पर इंसान इंसान में फर्क क्यों ? क्या यही सिखाया धर्म ने?

क्या यही धर्म है?

आज भी हम इन प्रश्नों के उत्तरों से अनुत्तरित है। हमें इनके हल त्वरित खोजने होंगे तभी मानवता जिंदा रहेगी।

समीक्षक-कैलाश मंडलोई 'कदंब'

5.

आदरणीया राधा जी, **आप स्वयं ऊर्जा का दूसरा रूप हैं** । आपकी अभिव्यक्ति में संवेदना भी है आक्रोश भी । देश काल ,समसामयिक परिवेश से लेकर सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन पर अपने विचार आप सटीक और निडर होकर अभिव्यक्त करती है । उम्र की तकलीफों के बावजूद ,साहित्य के प्रति आपका समर्पण नवसृजकों को प्रेरणा देता है । केंद्रीय रचनाकार के रूप में आपका हार्दिक स्वागत है ।

शीतल बनाम आग

प्यार में जब श्रृंगार के भाव उपस्थित है वो चन्द्रमाँ की तरह शीतलता देता है किंतु जब विरह का भाव उपस्थित होता है तो इससे बढ़कर कोई आग भी नहीं है । श्रृंगार और विरह के इन भावों की खूबसूरत अभिव्यक्ति ।

सोना जिसको समझा था..

रिश्ता प्यार का हो, या आम व्यवहारिक जीवन में बनते रिश्ते..रिश्तों में विश्वास,ईमानदारी और अपेक्षा का भाव समाहित होता है । बड़ी ही आसानी से आपने अपनी रचना में यह समझाया है कि जरूरी नहीं है हर रिश्ता अपेक्षाओं पर खरा उतरे ..सोना जिसको समझा है वो पीतल भी हो सकता है ..! कलयुग में इसकी प्रायिकता और बढ़ गयी हैं..रिश्ते बनाते समय सावधान करती उत्तम रचना ।

ठोकर

उद्वेलित करता हुआ सृजन..यूँ तो परिस्थितियों की ठोकरें इंसान को संघर्ष के साथ चलना सिखाती है..लेकिन कुछ ठोकरें इंसान अपनो को ही मार देता है ..वृद्धश्रमो के अस्तित्व के कारण पर चोंट करता हुआ सटीक सृजन ।

आदत

दिल के रिश्तों की कशिश अंगारों की तरह होती है । कभी अपेक्षा और मनमुटाव के कारण मध्दिम तो हो जाते है राख ओढ़ कर छिप जाते हैं लेकिन बुझते नहीं ..प्यार की हल्की सी हवा फिर वही आग सुलगा देती है। रिश्ता एक आदत बन जाता है । यह रचना भी आपकी आभिव्यक्ति का आपका अपना खूबसूरत अंदाज़ ।

जिन्दगी कैसे बितायें..

ज़िन्दगी कैसे बितायें ? इस प्रश्न का जवाब आप जैसे अनुभवी बुज़ुर्ग ही बता सकते हैं। दुनिया को जीतने से बेहतर है पहले स्वयं को जीत लिया जाये.. और उसके बाद कर्मपथ पर अग्रसर हों..हाथों की साहिल से सुंदर तुलना ..!मार्ग प्रशस्त करता हुआ सृजन ।

क्या यही धर्म है ?

समसामयिक घटनाओं पर अपना दृष्टिकोण रखना एक साहित्यकार का कर्तव्य भी है । जब धर्म देश से बड़ा हो जाये तो विप्लव निश्चित है । आक्रोश के साथ सटीक मत ।

आप एक जागरूक, ऊर्जावान एवं निर्भीक रचनाकारा हैं । आप अन्य रचनाकारों का भी मनोबल बढाती हैं । ईश्वर से आपके स्वस्थ एवं प्रसन्न जीवन की कामना करते हैं।

हेमन्त बोर्डिया

6.

आज की उत्सव मूर्ति **आ राधा गोयल जी का जीवन परिचय उनकी जिजीविषा की अदम्य मिसाल है,..**

चाहे लेखन में हो,पठन में हो,जीवन में हो या स्वास्थ्य के समीकरणों में ।

उनकी तमाम रचनाये पढीं,
इससे पहले भी पढ़ता रहा हूँ उनकी सटीक और सारगर्भित टिप्पणियाँ ।
केन्द्रीय पोस्ट के लिये हार्दिक **बधाई** राधा जी के साथ साथ
प्रीति जी और अनामिका जी को भी ।
खूबसूरती से सजाई गयी पोस्ट
उनकी सभी रचनायें बहुत सादगी से बुनी हुई, बेहद सुन्दर, और सम सामयिक हैं ।
क्या यही धर्म है ??
ताज़ा और
रोहिंग्यां मुसलमानों की समस्या पर **बहुत सटीक**,
सारगर्भित सृजन है, एक सृजन मन इर्द गिर्द की समस्याओं से अछूता नही रहता ।
और उन तथा कथित ठेकेदारों पर **खूबसूरत तंज़** भी।
साधुवाद ।

जिन्दगीं कैसे बिताये:-अपने अनुभवों का निचोड़ है गोया, पल पल का सदुपयोग और अपने मन के शत्रु पर विजय पाने की सलाह,
जीवन दूसरों के काम न आया तो किस काम का जीवन है ।

ऐ दिल तुझे क़सम है,
हिम्मत न हारना
गाना अकस्मात् याद आ गया
आदत :-जलना, बुझना, रूठना, मनाना मौलिक सम्बन्धों की, सर्वव्यापी चेतना से संश्लेषित सृजन

ठोकर:-अपनों द्वारा अपनों को दी गयी पीड़ा का आख्यान है, जहाँ टूटन के सिवा कुछ हासिल नही ।

सोना जिसको समझा था :-खूबसूरत रचना,
विडम्बना ये कि अक्सर वो पीतल भी नही निकलता,सूरत से सीरतों के आकलन कब हुए भला?

शीतल बनाम आग :-चाँद की **दोहरी फ़ितरत** की सटीक व्याख्या, संयोग वियोग की बेला में,
चाँद का बदलता व्यवहार
सभी रचनाओं की **भाषा सरल, सुग्राह्य और समृद्ध** है ।
और हर्ष का विषय ये है कि, वैयाकरणिक दृष्टि से बेहद मजबूत इन रचनाओं में टँकण त्रुटि भी नही दिखती ।
बहुत बहुत **बधाई और शुभकामनाएं**
जय हो, विजय हो ।

ब्रजेश शर्मा विफल, झाँसी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com